IJAER/ July-August -2022/Volume-11/Issue-4 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

जनजातीय संस्कृति पर वैश्वीकरण का प्रभाव
(दक्षिणी राजस्थान के विशेष संदर्भ में)

डॉ. मोतीलाल बरोड
शोधार्थी
प्राचार्य, महर्षि वाल्मीकि महाविद्यालय
घाटोल, जिला बांसवाड़ा (राज.)

दक्षिणी राजस्थान की जनजातियां भारत की आदिम जनजातियां है। दक्षिणी राजस्थान में भील, मीणा, गरासिया, डामोर, जनजाति की अपनी विलक्षण सांस्कृतिक धरोहर है जिसके कारण इनकी विशिष्ट पहचान है। जनजातियों की संस्कृति से हमें देश की मूल प्राचीन सांस्कृतिक धरोहर के दर्शन होते है जो आज मृत प्रायः हो गई है। विभिन्न भागों में निवास करने वाली प्रत्येक जनजाति समुदाय की अपनी अलग –अलग सांस्कृतिक पहचान है तथा इनके रीति–रिवाज, सांस्कृतिक आचार–व्यवहार एवं पर्व मनाने के तरीके भी भिन्न है। अपने विशिष्ट देवी–देवता, पूजा पद्धति, पहनावा, भाषा, संस्कार, उत्सव, नृत्य, परम्परायें, प्रथायें, मेले, सजने–सवरने का तरीका भी भिन्न–भिन्न होता हैं, जो क्षेत्र विशेष को एक अलग पहचान प्रदान करता है। उदाहरण के लिए राजस्थान, मध्यप्रदेश, गुजरात एवं महाराष्ट्र में निवास करने वाले भील समुदायों की अलग–अलग पहचान है।

राजस्थान का यह सुदूर दक्षिणी भाग वागड़ प्रदेश के नाम से विख्यात है। आदिवासी भील बहूल यह क्षेत्र आधुनिक चमक–दमक से कटा हुआ अवश्य है तथापि प्राचीन सांस्कृतिक परम्परा अक्षुण्ण बनाए रखने में यह अग्रणी है। वागड़ की जनजातियों ने अपनी सांस्कृतिक परम्परा, गीत, कथा, केवते एवं नृत्य की धरोहर को आज भी संजोएं रखा है। अनेक धार्मिक आस्थाओं और विश्वासों में प्रकट होता है कि जनजातीय सामाजिक जीवन सोलह संस्कारों से बंधा हुआ है।

दक्षिणी राजस्थान भील जनजाति की सामाजिक और सांस्कृतिक विशेषताओं का एक सुरम्य सामाजिक उद्यान है, जहां भांति–भांति के सुरभित पुष्प अपनी महक से इस क्षेत्र की गरिमा को सहजे हुए है। सुसंस्कृत जीवन ही व्यष्टि में समाहित होकर लोक जीवन जो आदर्श व व्यवस्थित रूपरेखा प्रदान करते है, ये ही आदर्श और मंगलकारी क्रियाए किसी क्षेत्र विशेष को सांस्कृतिक सम्पन्नता से निहाल कर देती है। ये सांस्कृतिक परम्पराएं बिना रोक–टोक प्रतिवर्ष हर्षोल्लास के साथ विधिवत सम्पन्न होती है। इस प्रकार लोक संस्कृति,

जनजीवन के सभी भौतिक–अभौतिक पक्षों को प्रकट करती है, जिसके माध्यम से जनजीवन का अनवरत रूप चलता रहता है।

संस्कृति के अन्तर्गत हम धार्मिक विश्वासों, अनुष्ठानों, क्रियाकलापों, लोकगीत, लोकसाहित्य, पूजा–पाठ, पर्व–उत्सव त्यौहार, मेलों तमाशों, नृत्य आदि का स्वरूप देखते हैं। इस क्षेत्र के लोक जीवन में जितना महत्व त्यौहारों का है, उनसे कहीं अधिक लोकगीत, लोक–नृत्य और लोक कलाओं का है, धार्मिक विश्वास और प्रथाओं का स्वरूप सबसे भिन्न होकर यहां के जन–जीवन में प्राणों का संचार किए हुए है। राजस्थान का दक्षिणांचल सदियों से प्राकृतिक सौन्दर्य की गरिमा से अभिमंडित रहा है। यह भू–भाग सघन प्राकृतिक वन सम्पदा से आच्छादित है। माही, सोम और जाखम नदियों की कल–कल करती धाराएं इसके सौन्दर्य को और अधिक निखार देती है। ऐसे रम्य वातावरण में विचरते स्वच्छंद भील आदिवासियों की मादक स्वर लहरी और नृत्यरत युवतियों के घुंघरूओं की झनकार इस परिदृश्य को और भी मनोहारी बना देती हैं। जनजातीय परम्परा का दिग्दर्शन कराता यह अंचल अपनी एक अलग छवि रखता है।

आज जनजातीय लोग ही नहीं पुरे भारत के लोग वैश्वीकरण से प्रभावित हो रहे है। वैश्वीकरण वर्तमान के समय के व्यापारिक माहोल की ऐसी अवधारणा है जो पुरे विश्व को एक मंडल, एक केन्द्र बनाने की बात करती है। आज वैश्वीकरण प्रत्येक क्षेत्र एवं वर्ग का मुख्य विषय बन गया है क्योंकि इसने समाज के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया है।

प्रशासनिक सम्पर्क, शहरी सम्पर्क, शिक्षा, सरकार द्वारा प्रवर्तित कल्याणकारी सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक सुधार के लिए भारत में और कुछ सीमा तक राजस्थान में होने वाले आन्दालनों ने ग्रामीण जनजातीय जनजीवन को प्रभावित किया है। इस समय गांव के लोगों के शहरों से सम्पर्क भी निरन्तर बढते चले गये, शहर में पढ़ाई के लिए अथवा रोजगार के लिए छोटी अथवा लम्बी अवधि के लिये रहना, मोटर साईकिलें और बसों के आ जाने से शहरी क्षेत्रों से नियमित और अधिकाधिक सम्पर्क सम्भव हो गये। पुस्तकें, पत्र–पत्रिकाएं, समाचार–पत्र, टी.वी., इन्टरनेट आदि गांव में आने से लोगों को दूनिया के बारे में अजीब–अजीब बाते सुनने को मिलने लगी।

राज्य प्रशासन ने अपनी कल्याणकारी और निर्माण योजनाएं गांवों में प्रारम्भ की। राज्य के कृषि, पशु–चिकित्सा, चिकित्सा सुविधाएं, सहकारिता एवं ग्राम विकास विभाग, जनजातीय क्षेत्रीय विकास विभाग,

ग्रामीण जनजातीय क्षेत्रों में कार्य करने लगे, उनके प्रतिनिधि और प्रचारक गांवों में नये विचार और विधियां लाये, गांववासियों एवं जनजातीय युवाओं में उनके प्रदर्शन देखे, उनकी वार्ताएं सुनी और उन्हे कई बार नये ढंग से काम करने के लिए कहा जाने लगा यह सचमुच एक नई बात थी। पहले युवा लोग शहर में होने वाले राजनीतिक आन्दोलन के विषय में बहुत स्पष्ट नही थे प्रायः सभी का बड़ा धीमा और अनिश्चित सा प्रभाव हुआ किन्तु शनै–शनै उनकी गहनता और प्रभावात्मकता बढ़ती चली गयी।

दक्षिणी राजस्थान का जनजातीय वर्ग आज वैश्वीकरण के दौर से गुजर रहा है और प्रभावित हो रहा है। चाहे वो संचार साधन हो या यातायात साधन या इलेक्ट्रॉनिक वस्तुएं आदि से जनजातीय युवा आज वैश्वीकरण की और अग्रसर हो रहा है। मोबाईल एवं टी.वी. तथा इंटरनेट ने युवा लोगों में बाहरी दुनिया के प्रति आकर्षण बढ़ाया है। युवा वर्ग जिसने शिक्षा पाई है या जिनका शहरों से सम्पर्क या शहर जाने की इच्छा की अभिव्यक्ति अधिकाधिक होने लगी है। अब युवा वर्ग पढ़ाई के साथ–साथ घरेलू खर्च हेतु अनेक व्यवसाय अपनाने लगे है। नये सामाजिक–आर्थिक कारकों के प्रभाव स्वरूप पारिवारिक बंधन कमजोर पड़ रहे है।

स्थानीय चुनाव, राज्य के चुनाव संसद के चुनाव और इससे जुड़ी राजनीतिक उलट–पुलट ने गांव में राजनीति का वर्चस्व स्थापित किया। राजनीति ने पुरानी ग्रामीण व्यवस्था को क्षीण किया है। भूमण्डलीकरण के दौर में गांव में कई समूह और गुट बन गये है, इन समूहों में परस्पर सहमति नहीं होती। गुटों के उदय से पंचायत की सत्ता कम हो गयी है। परिणामतः पंचायत द्वारा उनकी सुनवाई कर लेने पर तथा निर्णय दे दिये जाने पर भी कई मामलों में अनिश्चय की स्थिति बनी रहती है। अब अधिकतर मामले पुलिस या न्यायालय के द्वारा निपटाये जाते है। अधिकतर घनी और शिक्षित लोग पंचायत का निर्णय मानने में आनाकानी करते है। यह सही है कि अपना निर्णय मनवाने के लिए उनके पास कोई ताकत नहीं होती, और आजकल ऐसे मामले अक्सर सरकार द्वारा स्थापित न्यायालयों में जाते है।

आज अधिकांश लोग आधुनिक कृषि करते है, लेकिन ये लोग पहले (करीब 40–50 वर्ष पूर्व) स्थानान्तरण कृषि करते थे। पिछली दो–तीन पीढ़ियों से स्थाई कृषि की जाने लगी है। भीलों में कृषि व्यवस्था में पिछले 20–25 वर्षो से भूमण्डलीकरण के दौर में परिवर्तन दिखाई देने लगा है। इस परिवर्तन के पीछे प्रमुख कारण शिक्षा प्रसार तथा सरकारी वन व भूमि नीतियों के अलावा बाजारवाद प्रमुख रहा है। भील लोग अब स्थाई कृ

षि करने लगे है। इसके अतिरिक्त सरकार ने इन लोगों को रोजगार उपलब्ध कराये तथा लघु व छोटे–छोटे उद्योग खोलने के लिये आर्थिक सहायता प्रदान की है कुछ लोग मजदूरी भी करने लगे हैं। शिक्षा प्राप्त व्यक्ति अपनी कृषि में कम समय में अधिक पैदावार बढ़ाने के लिए खेतों में उच्च स्तरीय खाद और बीज का प्रयोग करने लगे है। ये लोग सिंचाई के नये–नये तरीके जैसे कुओं पर रहट तथा मोटर आदि का प्रयोग करने लगे है। लेकिन कृषि व्यवसाय में प्रायोगिक परिवर्तन न्यून मात्रा में हुए है. अभी भी अधिकांश देशज परिवार प्राचीन तरीकों से ही खेती करते है।

वर्तमान समय में भारतीय अर्थव्यवस्था का तेजी से वैश्वीकरण किया जा रहा है। उदारीकरण व निजीकरण सहित आर्थिक सुधारों के अन्य कार्यक्रम भी लागू किये जा रहे है। जिससे विदेशी मुद्रा का भण्डार अभूतपूर्व स्तर तक पहुंच गया है जिससे निर्यात में भी वृद्धि हुई है। वैश्वीकरण से जनजातीय अर्थव्यवस्था भी प्रभावित हुई है। भील जनजाति के लोगों में कृषि करने के तौर–तरीकों में परिवर्तन आया है तथा वे आधुनिक संसाधनों का उपयोग कृषि के क्षेत्र में करने लगे है ट्रेक्टरों, खाद एवं आधुनिक संसाधनों से कृषि कार्य करके अधिक उत्पादन प्राप्त कर रहा है जो उसके उपभोग के पश्चात् शेष रह जाता है उसे मण्डी अथवा दूकानों पर बेच दिया जाता है।

वैश्वीकरण का एक महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है कि आदिवासी तथा आदिवासी बाजार का वैश्विक अर्थव्यवस्था तथा बाजार के साथ तेजी से एकीकरण हो रहा है। आदिवासी अर्थव्यवस्था में वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप श्रम एवं वस्तुओं का विश्व स्तर पर एकीकरण हो रहा है इससे गलाकाट प्रतिद्वंदिता बढ़ रही है, राष्ट्रीय परिस्थितियों में जनजातियों की समस्याओं को देखने के बजाए वैश्विक परिस्थितियों में देखा जा रहा है, जिससे जनजातियों की आवाज कमजोर हुई।

पिछले कुछ दशकों से विकास के नाम पर जनजातीय गांवों का स्वरूप बदल रहा है। इस शहरीकरण एवं वैश्वीकरण की प्रक्रिया में नैतिक मूल्यों का ह्रास हो गया है। लोग रोजी–रोटी की तलाश में गांवों से शहरों की ओर पलायन कर रहे है और वहां से नशे की आदत और ऐसी कई बुराईयां साथ लेकर आ रहे हैं, जिनकी उनके बुजुर्गों ने कभी कल्पना नहीं की थी। भाईचारे की भावना बिल्कुल विलुप्त हो गई है। रोजगार तथा ग्रामीण उद्योगों के अभाव के कारण युवकों का शहरों की और पलायन करना तथा आधुनिकता के मायाजाल में फंस कर बुराईयों को गले लगाना कोई हैरानी की बात नहीं है। जनजातियों के हाथों में जब तक आर्थिक और राजनीतिक स्वतंत्रता नहीं होगी, विकास की कल्पना को साकार करना मुश्किल होगा

जनजाति समूह का विकास हुआ है पर निरक्षर लोगों को उसका लाभ बहुत कम मिला है। लगभग एक तिहाई जनसंख्या का जीवन स्तर सुधरा है और सामान्यजन भविष्य की और आशा से देख रहे है। जो वायदे उनसे किये गये थे वे आधुनिक युग में भी पूरे नहीं हुए गरीबी का उन्मूलन नहीं हुआ, बेरोजगारी का परिणाम बढ़ा है घटा नहीं और सामाजिक सेवाओं की गुणवत्ता संदिग्ध ही रही है।

संदर्भ ग्रंथ सूचीः–

1. दुबे, श्यामचरण (1996). ''भारतीय ग्राम'' वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली द्वितीय संस्करण पृ.सं. 50–55
2. व्यास, सत्यनारायण (2002) ''जनजातीय लोकगीत एक अध्ययन'' अंकुर प्रकाशन उदयपुर प्रथम संस्करण, पृ.सं. 14–35
3. राठौड़, अजयसिंह (1994) ''भील जनजाति शिक्षा और आधुनिकीकरण'' प्रथम संस्करण पृ.सं. 24–28
4. उपाध्याय, विजयशंकर (2002). ''भारत की जनजातीय संस्कृति'' सप्तम संस्करण, पृ.सं. 33–35
5. जैन, नेमीचन्द (1964) '' भील भाषा, साहित्य और संस्कृति'' भैयालाल प्रकाशन इन्दौर मध्यप्रदेश पृ.सं. 105–107
6. भट्ट, नीरजा (2007) ''18वीं व 19वीं शताब्दी में राजस्थान का भील समाज'' हिमांशु पब्लिकेशन्स, उदयपुर, पृ.सं. 14–16
7. ओझा, गोरीशंकर, हीराचंद (1994) ''उदयपुर राज्य का इतिहास'' प्रथम खण्ड, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर (प्रथम प्रकाशन 1928) पृ.सं. 209–212
8. मीणा, जगदीश चन्द्र (2003) '' भील जनजाति का सांस्कृतिक एवं आर्थिक जीवन'' हिमांशु पब्लिकेशन्स, उदयपुर पृ.सं. 45–47
9. दुबे, अभय कुमार (1998) ''भारत का भूमण्डलीकरण'' पृ.सं. 35–37
10. नरेन्द्र सिंह एवं सीमादेवी (2004). लेख ''भारत में महिला साक्षरता की स्थिति'' ग्रामीण विकास मंत्रालय, प्रकाशन विभाग, कुरुक्षेत्र, सितम्बर, वर्ष 22. अंक 1–4, पृ.स. 23–25
11. रमेश नायर (2004), लेख ''जनजाति क्षेत्रों में बालिका शिक्षा'' ग्रामीण विकास मंत्रालय, प्रकाशन, नई दिल्ली, कुरूक्षेत्र, वर्ष 50 अंक 1, पृ.सं. 34–35
12. व्यास, डॉ. श्याम मनोहर (2004) ''राजस्थान में साक्षरता'' ग्रामीण विकास मंत्रालय, प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली, कुरूक्षेत्र, वर्ष 50, अंक 1, पृ.स. 32–33